टमाटर

- उचित जल निकास वाली बलुई दोमट भूमि सर्वोत्तम होती है।
- अच्छी पैदावार के लिए प्रति एकड़ 70–80 कु0 सड़ी गोबर की खाद खेत में डालकर उसे 4–5 बार जुताई करके मिट्टी को भुरभूरी तथा खेत को समतल कर लें।
- रोपाई से पूर्व 60–70 किग्रा0 डी0ए0पी0 प्रति एकड़ जुताई के समय खेत में मिला दें।
- अधिक उत्पादन हेतू–पूसा शीतल, पूसा रूबी, एस 120, रोमा, अपूर्णा, एच0एस0 102, पूसा उपहार, कंचन, पूसा गौरव, अंगूरलता, हिसार ललित, पंत हाइब्रिड 1,2 के.टी. 1,2,3 पू0 हाइब्रिड 1,2,3,4 पूसा सदाबहार, कल्याणपुर, टी–1, आदि प्रजातियों का उपचारित बीज से पौध तैयार करें।
- उन्नत प्रजातियों का 200 ग्राम, तथा संकर प्रजातियों का 80–100 ग्राम बीज प्रति एकड़ की रोपाई हेतु आवश्यकता होती है।
- शरद कालीन फसल हेतु बीज को नर्सरी में जून–जुलाई में बोते हैं और जुलाई–अगस्त में रोपाई करते हैं।
- वसंत से ग्रीष्म ऋतु या मुख्य फसल के बीजों को नर्सरी में नवम्बर–दिसम्बर में बोते है और जनवरी–फरवरी में रोपाई करते हैं।
- 30–35 दिन की पौध जिसमें 5–6 पत्तियाँ हो (लगभग 15 सेमी0 ऊँची) को पंक्ति से पंक्ति 60–75 सेमी0 तथा पौधे से पौधा 45 से 60 सेमी0 की दूरी पर रोपाई करें।
- रोपाई के तुरन्त बाद हल्की सिंचाई तथा बाद में आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।
- रोपाई के 20 दिन बाद तथा फूल आने पर 25 कि.ग्रा0 यूरिया दो बार टापड्रेसिंग के रूप में इस्तेमाल करें।
- तना छेदक, कैटर पिलर, जैसिड़स, फल मक्खी आदि से बचाने हेत् नीम गोल्ड या नीमेरिन 3–4 मिली0या मैला थियान 50 ई0सी0 2 मिली0 प्रति लीटर पानी की दर से आवश्यक घोल बनाकर छिड़काव करें।
- छिड़कांव 7–10 दिन के अन्तराल पर कम से कम तीन बार करें।
- मरोड़िया (लीफ कर्ल) यह वाइरस बिमारी इसे सफेद मक्खी फेलाती है।
- बचाव हेतू नीम गाल्ड 3–4 मिली या मैलाथियान 50 ई0सी0 2 मिली0 मात्रा प्रति ली0 पानी की दर से 3–4 बार छिड़काव करें।
- निभेटीसाइड–कार्बोफ्यूरान 3 जी0 की 10–12 किग्रा0 मात्रा प्रति एकड़ रोपाई से पूर्व मिट्टी में मिला दें।प्रति एकड़ 100 से 180 कु0 तक पैदावार लें।